

वर्ड स्मिथ

ऐसे बना स्कूल शब्द

'स्कूल' शब्द की उत्पत्ति और इसके पीछे की कहानी काफी रोचक है। 'स्कूल' शब्द अंग्रेजी के School से आया है, जिसका मूल स्रोत ग्रीक भाषा का शब्द Scholē है। प्राचीन ग्रीक में Scholē का अर्थ होता था 'फुर्सत का समय' या 'खाली समय'। उस दौर में लोग अपने खाली समय का उपयोग ज्ञान प्राप्त करने, विचार-विमर्श करने और नई चीजें सीखने में करते थे। धीरे-धीरे यह शब्द सिर्फ खाली समय तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उस स्थान के लिए इस्तेमाल होने लगा, जहाँ लोग बैठकर पढ़ते-लिखते और ज्ञान अर्जित करते थे। ग्रीक से यह शब्द लैटिन भाषा में Schola बना और फिर यूरोपीय भाषाओं के माध्यम से अंग्रेजी में School हो गया। भारत में अंग्रेजों के आगमन के बाद यह शब्द 'स्कूल' के रूप में प्रचलित हुआ।



प्राचीन समय में शिक्षा गुरुकुलों में दी जाती थी, जहाँ छात्र अपने गुरु के साथ रहकर शिक्षा ग्रहण करते थे, लेकिन आधुनिक शिक्षा प्रणाली में 'स्कूल' एक संगठित संस्था के रूप में विकसित हुआ, जहाँ निश्चित पाठ्यक्रम, समय-सारणी और कक्षाओं के माध्यम से पढ़ाई होती है।

इस प्रकार 'स्कूल' शब्द केवल एक भवन का नाम नहीं है, बल्कि यह उस विचार का प्रतीक है, जहाँ इंसान अपने समय का सदुपयोग करके ज्ञान और संस्कार प्राप्त करता है। इसकी जड़ें हमें यह सिखाती हैं कि सीखना सिर्फ मजबूरी नहीं, बल्कि एक आनंददायक प्रक्रिया होनी चाहिए।

नोटिस बोर्ड

एल्यूके के सम सेमेस्टर फॉर्म की आवेदन तिथि बढ़ी

लखनऊ विश्वविद्यालय (एल्यूके) ने सम सेमेस्टर (जून 2026) की परीक्षाओं के लिए ऑनलाइन परीक्षा फॉर्म जमा करने की अंतिम तिथि को बढ़ाकर 16 अप्रैल कर दिया है, जिससे स्नातक (यूजी), स्नातकोत्तर (पीजी), डिप्लोमा और अन्य कार्यक्रमों के छात्रों को राहत मिली है। यह विस्तार नियमित, पिछले वर्षों की परीक्षाओं, सुधार परीक्षाओं और छूट प्राप्त (माफी योग्य) परीक्षाओं में बैठने वाले छात्रों पर लागू होता है। हालांकि, द्वितीय सेमेस्टर के छात्र इस अधिसूचना के अंतर्गत नहीं आते हैं।

कानपुर में फैशन डिजाइनिंग कोर्स शुरू

कानपुर के छत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय ने इस सत्र से फैशन डिजाइनिंग का तीन वर्षीय डिग्री कोर्स शुरू किया है, जिससे छात्रों को अब दिल्ली और मुंबई जाने की जरूरत नहीं होगी। यह कोर्स इंडस्ट्री की जरूरतों के अनुसार तैयार किया गया है, जिसमें थ्योरी के साथ प्रैक्टिकल ट्रेनिंग, इंटरशिप और फैशन शो शामिल हैं। छात्र टेक्सटाइल, डिजाइनिंग, मार्केटिंग जैसे विषय सीखेंगे। इसके अलावा अन्य स्किल बेस्ड कोर्स भी उपलब्ध हैं। इस पहल से रोजगार और स्टार्टअप के अवसर बढ़ेंगे तथा आसपास के जिलों के छात्रों को कम खर्च में बेहतर शिक्षा मिल सकेगी।

कैंपस का पहला दिन

कैंपस में पहला दिन मेरे जीवन के सबसे यादगार दिनों में से एक रहा। स्कूल से निकलकर कॉलेज में कदम रखना एक नए संसार में प्रवेश करने जैसा था। मन में उत्साह के साथ हल्की-सी झिझक भी थी, लेकिन ज्यादा डर नहीं लगा क्योंकि मेरे दो चचेरे भाई भी उसी कॉलेज में मेरे साथ एडमिशन लिए थे। हम तीनों का साथ होना मेरे लिए बहुत बड़ा सहारा था।



यश सिन्हा
छात्र

पहले दिन हम तीनों साथ ही कॉलेज पहुंचे। नए कपड़े पहनकर, हाथ में रिस्ट वॉच, आंखों पर धूप का चश्मा और पैरों में मर्गो जूते पहनकर हम खुद को किसी हीरो से कम नहीं समझ रहे थे। क्लास में जाकर हमने एक साथ बैठना तय किया। उस दिन पढ़ाई से ज्यादा ध्यान नए माहौल को समझने और नए दोस्तों को देखने में था।

इंटर तक हम वॉयज स्कूल में पढ़े थे, इसलिए कॉलेज में लड़कियों के साथ पढ़ना हमारे लिए बिल्कुल



नया अनुभव था। उनके सामने बात करने में झिझक होती थी और अंदर ही अंदर एक अलग-सा रोमांच भी महसूस होता था। कई बार हम एक-दूसरे को देखकर मुस्करा देते और फिर नजरें झुका लेते। यह सब बहुत नया और मजेदार था।

धीरे-धीरे हमारा रूटीन बन गया। हम साथ में क्लास अटेंड करते, साथ में लंच करते और कभी-कभी क्लास वॉक भी कर लेते थे। कॉलेज की कैटिन हमारी सबसे

पसंदीदा जगह बन गई थी। वहां बैठकर घंटों हंसी-मजाक करना, चाय-समोसे खाना और दोस्तों के साथ समय बिताना हमें बहुत अच्छा लगता था। सुबह कॉलेज जाने की तैयारी भी खास होती थी। हम अच्छे से तैयार होकर जाते ताकि सबके सामने अच्छा प्रभाव पड़े, खासकर लड़कियों के सामने थोड़ा स्टाइल मारने का अलग ही मजा था।

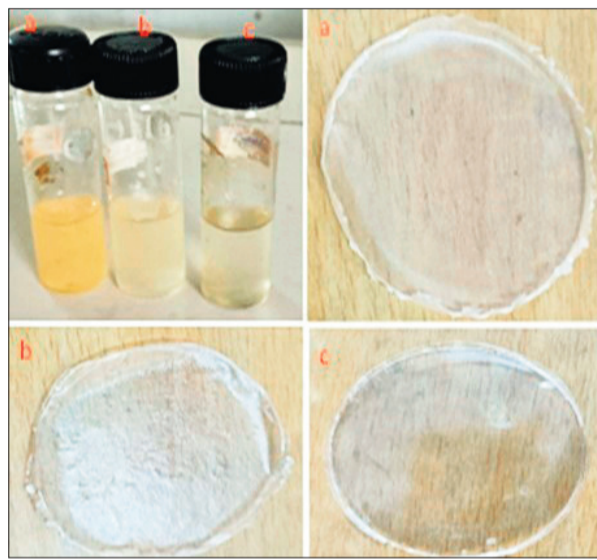
कुल मिलाकर, कॉलेज का पहला दिन सिर्फ एक शुरुआत नहीं था, बल्कि दोस्ती, मस्ती और नए अनुभवों की एक खूबसूरत कहानी की शुरुआत था, जिसे याद करके आज भी चेहरे पर मुस्कान आ जाती है। धीरे-धीरे हम कॉलेज के माहौल में पूरी तरह घुलने-मिलने लगे। नए दोस्तों का दायरा बढ़ता गया और हर दिन कुछ नया सीखने को मिलता था। प्रोफेसरों का पढ़ाने का अंदाज भी स्कूल से काफी अलग था, जो शुरुआत में थोड़ा अजीब लगा, लेकिन बाद में वही सबसे रोचक लगने लगा। खाली पीरियड में कैंपस में घूमना, लाइब्रेरी में समय बिताना और फेस्टिवल्स की तैयारी करना हमारी दिनचर्या का हिस्सा बन गया। हर दिन के साथ हमारा आत्मविश्वास बढ़ता गया और कॉलेज जीवन की यह नई दुनिया हमें और भी आकर्षित करने लगी।

अमृत विचार

कैम्पस

खाद्य पदार्थ एल्यूमिनियम फॉयल, बटर पेपर, प्लास्टिक कंटेनर में पैक कराकर घर ले जाकर खाने से बीमार होने का डर अब नहीं सताएगा। उसमें डाले जाने वाले केमिकल से बच सकेंगे। पर्यावरण को भी किसी तरह से नुकसान नहीं पहुंचेगा। केमिकल से बने इन पैकिंग मटेरियल की जगह बाजार में जल्द ही पर्यावरण अनुकूल फिल्म में खाना रखकर दिया जा सकेगा। इसके लिए राजकीय महिला महाविद्यालय के रसायन विभाग के विभागाध्यक्ष एसिस्टेंट प्रोफेसर ने एमजेपी रुहेलखंड विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर और दो शोधार्थियों के साथ मिलकर पर्यावरण-अनुकूल बायोडिग्रेडेबल पैकेजिंग फिल्म विकसित की है, जिसमें पैकेजिंग में खाद्य पदार्थ खराब नहीं होंगे। अब तक की पैकेजिंग में लगने वाले केमिकल से कोई नुकसान नहीं होगा। उन्होंने शोध का पेटेंट भी करा लिया है।

-ऋषिदेव गंगवार, बदायूं



दीर्घकाल तक अपघटित नहीं होते सिंथेटिक पॉलिमर

यह शोध बीमारी के अलावा पर्यावरण को भी संतुलित करेगा। डॉ. बृजेश कुमार ने बताया कि प्लास्टिक आधारित पैकेजिंग सामग्री से बीमारी पैदा हो रही थी और पर्यावरण को लेकर भी परेशानी थी, जिसके चलते शोध की प्रक्रिया के बाद इस फिल्म को विकसित किया गया। कहा कि पारंपरिक सिंथेटिक पॉलिमर दीर्घकाल तक अपघटित नहीं होते, जिसकी वजह से मृदा और जल प्रदूषण में लगातार वृद्धि होती रहती है। प्राकृतिक, जैव अनुकूल और सतत विकल्पों का विकास बहुत जरूरी हो गया था, जिसकी वजह से इसकी संरचना के बारे में विचार आया।



पैकिंग में खराब नहीं होंगे खाद्य पदार्थ ना ही केमिकल से होगा नुकसान



बाहर से खाना पैक कराने पर पैकिंग शीट के केमिकल की वजह से शरीर को बहुत हानि होती है। तरह-तरह की बीमारियां पनपती हैं, जिसको ध्यान में रखकर राजकीय महिला महाविद्यालय के रसायन विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बृजेश कुमार ने एमजेपी रुहेलखंड विश्वविद्यालय के अनुप्रयुक्त रसायन विज्ञान के एसोसिएट प्रो. डॉ. प्रमोद कुमार, शोधार्थी डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. मोहम्मद के साथ

मिलकर समस्या पर मंथन किया। शोध करने के बाद सभी ने मिलकर पर्यावरण अनुकूल बायोडिग्रेडेबल पैकेजिंग फिल्म तैयार की। जिन्हें साइट्रिक एसिड से क्रॉस लिंक कर अधिक मजबूत, जल प्रतिरोधी और ऊष्मीय रूप से स्थिर बनाया गया है, जिसका उच्च पारदर्शिता, लचीलापन, जीवाणुरोधी गुण और 35 दिनों के भीतर मिट्टी में अपघटन जैसी विशेषताएं मिलीं। खुद पूरी तरह से परीक्षण करने के बाद अब तैयारी थी पेटेंट की। शोध के अनुसार यह फिल्म फल सब्जियों की शेल्फ लाइफ बढ़ाने में भी सहायक है। कम्पोजिट फिल्मस विद सिस्ट्रिक एसिड क्रॉस-लिंकिंग फॉर पैकेजिंग रहा।



यह तकनीक न केवल पर्यावरण को बचाएगी, बल्कि भारतीय खाद्य उद्योग को सस्ती और सुरक्षित पैकेजिंग प्रदान करेगी। यह उपलब्धि हर किसी के लिए गौरव का विषय है। जल्द ही पैकेजिंग में नई क्रांति आने वाली है। शोध के बाद इसे पेटेंट मिल गया है। यह पैकेजिंग जल्द ही बाजार में नजर आएगी।

- डॉ. बृजेश कुमार

इस प्रकार विकसित की गई पैकेजिंग फिल्म

डॉ. बृजेश कुमार ने बताया कि विकसित की गई कम्पोजिट फिल्म पूरी तरह से पर्यावरण के अनुकूल है, जिसके निर्माण में सोडियम एल्जीनेट और डी एसिटाइलेटेड का उपयुक्त अनुपात में मिलान किया गया है। साइट्रिक एसिड के माध्यम से क्रॉस लिंकिंग करके त्रिआयामी एस्टर बांडेड नेटवर्क की संरचना निर्मित की गई, जिससे फिल्म की यांत्रिक सुदृढ़ता, जल प्रतिरोधक क्षमता और तापीय स्थिरता में वृद्धि मिली। इसके अलावा ग्लिसरॉल को प्लास्टिसाइजर के रूप में सम्मिलित कर फिल्म की लचीलापन और भंगुरता नियंत्रण सुनिश्चित किया गया, जिसके प्रयोग के बाद शोधकर्ताओं को पता चला कि विकसित फिल्म उच्च पारदर्शिता, न्यून धुंधलापन और पर्याप्त यांत्रिक गुण प्रदर्शित करती है। मृदा दफन परीक्षणों में लगभग 35 दिनों के भीतर पर्याप्त जैव अवक्रमण (biodegradation) मिला, इसके अलावा यह फिल्म Staphylococcus aureus, Escherichia coli और Pseudomonas aeruginosa जैसे खाद्य जनित रोगाणुओं के विरुद्ध प्रतिजैविक (antibacterial) सक्रियता प्रदर्शित करती है। सामाजिक और औद्योगिक परिप्रेक्ष्य में यह तकनीक खाद्य संपर्क अनुप्रयोगों के लिए सुरक्षित, गैर विषैली और पर्यावरण अनुकूल विकल्प प्रस्तुत करती है। फल और अन्य शीघ्र नष्ट होने वाले खाद्य पदार्थों की पैकेजिंग में इसके उपयोग से शेल्फ लाइफ में वृद्धि के साथ दृश्य गुणवत्ता संरक्षण संभव है।

करंट अफेयर्स

- हाल ही में 11 अप्रैल को श्रीहरिकोटा में ISRO ने एक नए उपग्रह के परीक्षण की तैयारी की घोषणा की, जिससे संचार सेवाओं को मजबूती मिलेगी।
- हाल ही में 13 अप्रैल को लखनऊ में राज्य सरकार ने नई रोजगार योजना की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य युवाओं को कौशल प्रशिक्षण देकर रोजगार के अवसर बढ़ाना है।
- हाल ही में 12 अप्रैल को मुंबई में भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकिंग सुधारों को लेकर बैठक की, जिसमें डिजिटल बैंकिंग को बढ़ावा देने पर चर्चा हुई।
- हाल ही में 10 अप्रैल शुक्रवार को वॉशिंगटन डी.सी. में अमेरिका ने नई आर्थिक नीति पेश की, जिसका उद्देश्य महंगाई नियंत्रण और रोजगार सृजन है।
- हाल ही में 14 अप्रैल को नई दिल्ली में भारत सरकार ने डॉ. भीमराव अंबेडकर की जयंती पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया, जिसमें सामाजिक न्याय और समानता पर जोर दिया गया।
- हाल ही में 9 अप्रैल को संयुक्त राष्ट्र ने जलवायु परिवर्तन पर नई रिपोर्ट जारी की, जिसमें वैश्विक तापमान वृद्धि को लेकर चिंता जताई गई।
- हाल ही में 8 अप्रैल को टोयोतो में भारत और जापान के बीच व्यापार वार्ता हुई, जिसमें निवेश और टेक्नोलॉजी सहयोग बढ़ाने पर सहमति बनी।
- हाल ही में 7 अप्रैल को विश्व स्वास्थ्य संगठन ने विश्व स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर वैश्विक स्वास्थ्य जागरूकता अभियान चलाया।
- हाल ही में 6 अप्रैल को अहमदाबाद में भारतीय रेलवे ने नई वंदे भारत ट्रेन सेवा शुरू की, जिससे यात्रा समय में कमी आएगी।

जॉब अलर्ट

विकास सौहार्द सहकारी बैंक लि

- पद का नाम - शाखा प्रबंधक/वरिष्ठ अधिकारी, लेखा परीक्षक, विधि अधिकारी, परिचालनाधीन अधिकारी, वसूली सहायक/कनिष्ठ सहायक
- पदों की संख्या - 46
- योग्यता - एफएसएलसी, स्नातक, या कानून/वाणिज्य/लेखा में स्नातक
- आयु सीमा - अधिकतम आयु - 30-35 वर्ष (दिनांक 01.04.2026 तक)
- अंतिम तिथि - 24-04-2026
- सरकारी चिकित्सा विज्ञान संस्थान (जीआईएमएस)
- पद का नाम - गैर शिक्षण (प्रयोगशाला तकनीशियन / ओटी तकनीशियन)
- पदों की संख्या - 50
- वेतन - 2800-29200
- योग्यता - इंटरमीडिएट (विज्ञान) + संबंधित विषय में डिप्लोमा
- आयु सीमा - 21-40 वर्ष (दिनांक 01.07.2026 तक) लागू छूटों के साथ
- आवेदन करने की अंतिम तिथि - 09-05-2026
- वेबसाइट - <https://www.gims.ac.in>

टैरिटरियल आर्मी कमीशन परीक्षा



- पद का नाम - टैरिटरियल आर्मी ऑफिसर (लेफ्टिनेंट के रैंक पर कमीशन प्राप्त)
- कुल पद - 12 (पुरुष - 11/महिला - 01)
- राष्ट्रीयता - केवल भारतीय नामांकित (पुरुष और महिला)
- आयु सीमा - 19 मई 2026 तक 18 से 42 वर्ष
- योग्यता - किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से स्नातक
- आवेदन का तरीका - केवल ऑनलाइन - www.indianarmy.nic.in
- आवेदन शुल्क - Rs. 500/- (केवल ऑनलाइन भुगतान)
- परीक्षा का प्रकार - कंप्यूटर आधारित परीक्षा (CBT)
- परीक्षा की तिथि - 12 जुलाई 2026

प्रोफेसर से पीएसयू तक : यूजीसी नेट के बाद खुलते हैं ये रास्ते

उच्च शिक्षा और रिसर्च के क्षेत्र में करियर बनाने की इच्छा रखने वाले छात्रों के लिए यूजीसी नेट एक महत्वपूर्ण परीक्षा मानी जाती है। यह राष्ट्रीय स्तर की परीक्षा न केवल शिक्षण क्षेत्र में प्रवेश का रास्ता खोलती है, बल्कि रिसर्च, पब्लिक सेक्टर और विभिन्न सरकारी संस्थानों में अवसर भी प्रदान करती है। हालांकि इसे पास करने के बाद सीधे नौकरी नहीं मिलती, लेकिन यह कई प्रतिष्ठित पदों के लिए पात्रता सुनिश्चित करती है। सही जानकारी और योजना के साथ यूजीसी नेट क्वालिफाई करने वाले उम्मीदवार अपने करियर को एक नई ऊंचाई तक ले जा सकते हैं।



ज्ञानेंद्र कुमार दीक्षित
असिस्टेंट प्रोफेसर, बीबीडी यूनिवर्सिटी, लखनऊ

असिस्टेंट प्रोफेसर बनने का अवसर- यूजीसी नेट क्वालिफाई करने के बाद उम्मीदवार कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में असिस्टेंट प्रोफेसर बनने के योग्य हो जाते हैं। यह एक प्रतिष्ठित और स्थिर सरकारी शिक्षण पद है, जिसमें शिक्षण के साथ-साथ रिसर्च का भी अवसर मिलता है। इस पद के लिए किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से पोस्ट ग्रेजुएशन आवश्यक होता है। सैलरी की बात करें तो 7 वें वेतन आयोग के अनुसार शुरुआती वेतन लगभग 57,000 रुपये प्रतिमाह होता है, जो अनुभव और प्रमोशन के साथ 1,82,400 रुपये तक पहुंच सकता है। इसके अलावा महंगाई भत्ता (डीए), मकान किराया भत्ता (एचआरए) और यात्रा भत्ता (टीए) जैसे कई अन्य लाभ भी मिलते हैं। समय के साथ असिस्टेंट प्रोफेसर से एसोसिएट प्रोफेसर और फिर प्रोफेसर बनने का अवसर भी मिलता है।

पब्लिक सेक्टर अंडरटेकिंग में करियर- यूजीसी नेट पास करने के बाद उम्मीदवारों के लिए पब्लिक सेक्टर अंडरटेकिंग (PSU)



में भी करियर के कई विकल्प खुलते हैं। ये सरकारी कंपनियां होती हैं, जिनमें रिसर्च, ह्यूमन रिसोर्स, मैनेजमेंट और पॉलिसी से जुड़े पदों पर भर्ती की जाती है। ONGC, NTPC, IOCL, BHEL, GAIL और SAIL जैसी कंपनियों में HR Officer, मैनेजमेंट ट्रेनि, रिसर्च ऑफिसर, CSR ऑफिसर और पॉलिसी एनालिस्ट जैसे पदों पर आवेदन किया जा सकता है। इन संस्थानों

जूनियर रिसर्च फेलोशिप

JRF अर्थात् जूनियर रिसर्च फेलोशिप, यूजीसी नेट के माध्यम से मिलने वाली एक महत्वपूर्ण फेलोशिप है, जो शोध करने के इच्छुक छात्रों के लिए बेहद उपयोगी है। इस फेलोशिप के तहत पीएचडी कर रहे छात्रों को मासिक स्टेंडिंग प्रदान किया जाता है, जिससे वे बिना आर्थिक दबाव के अपनी रिसर्च जारी रख सकें। JRF प्राप्त करने के बाद उम्मीदवारों के लिए असिस्टेंट प्रोफेसर, रिसर्च एसोसिएट, पॉलिसी रिसर्च और विभिन्न थिंक टैंक्स में काम करने के अवसर बढ़ जाते हैं।

रिसर्च, प्रोजेक्ट एसोसिएट और फेलो जैसे पदों पर कार्य करने का अवसर मिलता है। CSIR लैब्स, ICSSR, DRDO, ISRO और BARC जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में काम करने का मौका मिलता है, जहां उम्मीदवार नई खोज और शोध कार्य में योगदान दे सकते हैं। यह क्षेत्र उन छात्रों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त है, जो रिसर्च में गहरी रुचि रखते हैं।